

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों पर भाषा के प्रभाव का अध्ययनअनिल कुमार कश्यप¹ ; प्रो० डॉ० बेबी कुमारी²DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23089053>**Review: 29/08/2026****Acceptance: 03/09/2026****Publication: 01/10/2026**

सारांश

शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलने वाली क्रमिक सोदेश्य पूर्ण क्रमिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्त जन्मजात एवं अंतर्निहित शक्तियों का समग्र विकास कर उसके व्यवहार में परिमार्जन किया जाता है। प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त माध्यमिक शिक्षा की शुरुआत होती है माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थी के जीवन का महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि माध्यमिक स्तर पर सोचने समझने सामाजिक व्यवहार, आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। जो आगे आने वाले जीवन की आधारशिला होती है। शिक्षा ग्रहण करने में भाषा की प्रमुख भूमिका हाती है यदि व्यक्ति का किसी भी भाषा पर कुशलता या निपुणता प्राप्त है, तो वह किसी भी विषय को आसानी से समझ एवं सीख सकता है। इसके साथ अध्ययन आदतों का शिक्षा में विशेष योगदान होता है। अच्छी अध्ययन आदत अच्छे परिणाम प्राप्त करने में सदैव सहायता प्रदान करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर पर बालकों की शिक्षा में भाषा तथा अध्ययन आदतों का क्या योगदान होता है इस पर विचार किया गया है।

शब्द कुंजी— सुगमता, यथार्थता, ध्यान स्वतंत्र्य, क्रियाशीलता, परिमार्जन

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्तिगत विकास तथा सामाजिक विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा न केवल लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है, बल्कि इसके साथ-साथ शिक्षा सामाजिक तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। “माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह स्तर है जिसमें विद्यार्थी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् कक्षा 9वीं और 10वीं में अध्ययन करते हैं तथा उच्च शिक्षा और भावी जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं दृष्टिकोण विकसित करते हैं।”

किशोरावस्था का चरण – इस स्तर पर अधिकांश विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं।

- बौद्ध विकास – तर्क, चिंतन, विश्लेषण एवं समस्या-समाधान की क्षमता विकसित होती है।
- विषय-विस्तर – विभिन्न विषयों का व्यवस्थित एवं अपेक्षाकृत गहन अध्ययन कराया जाता है।
- व्यक्तित्व विकास – विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक व्यक्तित्व का विकास होता है।
- स्वतंत्र चिंतन— विद्यार्थी स्वयं निर्णय लेने और अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करते हैं।
- भविष्य की तैयारी – उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा रोजगार के लिए आधार तैयार होता है।
- अध्ययन की आदतों का विकास – नियमित अध्ययन, समय-प्रबंधन, एकाग्रता और स्व-अध्ययन जैसी आदतें विकसित होती हैं।
- सामाजिक विकास— सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व, जिम्मेदारी और सामाजिक व्यवहार का विकास होता है।
- मूल्य एवं चरित्र निर्माण – नैतिक, सामाजिक एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास पर बल दिया जाता है।

¹ शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड

² शोध निर्देशिका, साई नाथ विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड

व्यक्तिगत भिन्नता—

विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता, बुद्धि, पारिवारिक पृष्ठभूमि और सीखने की गति में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। माध्यमिक स्तर, प्राथमिक स्तर तथा उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है इस स्तर पर जो भी मूल्य, विचार, अवधारणाएँ, विद्यार्थी के अंदर बन जाती हैं वह उसके आने वाले जीवन की आधारशिला होती है माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, किशोरावस्था एक विशेष अवस्था है क्योंकि इसमें शारीरिक परिवर्तन, संवेगात्मक अस्थिरता, विद्रोह की भावना, आत्मनिर्भरता भावी जीवन की तैयारी का समय, अति महत्वाकांक्षी होना, विपरीत लिंगी आकर्षक होना आदि अनेक विशेषताएँ जो इस अवस्था को एक अलग पहचान दिलाती हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी ना तो पूर्णतया बालक होता है और ना ही व्यस्क होता है यह अवस्था उसके लिए समस्यात्मक आयु होती है।

भाषा शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। भाषा के द्वारा विद्यार्थी ज्ञान, विचार, भावनाएँ और अनुभव व्यक्त तथा ग्रहण करते हैं। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

भाषाओं में शिक्षा की प्रमुख भूमिकाएँ—

ज्ञान प्राप्ति का माध्यम — भाषा के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

विचारों की अभिव्यक्ति — भाषा विद्यार्थियों को अपने विचार, भावनाएँ और अनुभव स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम बनाती है।

बौद्धिक विकास — भाषा सीखने में चिंतन, तर्क, कल्पना और विश्लेषण की क्षमता का विकास होता है।

संचार कौशल का विकास — भाषा विद्यार्थियों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित करती है।

सांस्कृतिक संरक्षण— भाषा के माध्यम से साहित्य, परंपराएँ, लोकज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं हस्तांतरण होता है।

व्यक्तित्व विकास — प्रभावी भाषा—ज्ञान से आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक व्यवहार में सुधार होता है। शैक्षिक उपलब्धि में सहायता— भाषा पर अच्छी पकड़ होने से विद्यार्थी अन्य विषयों को भी अधिक प्रभावी ढंग से समझ पाते हैं।

सामाजिक समायोजन — भाषा विभिन्न व्यक्तियों एवं समुदायों के बीच संवाद और सहयोग स्थापित करने में सहायता करती है।

बहुभाषिकता का विकास — एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों और समाजों को समझने में सहायता करता है।

रोजगार एवं भविष्य की तैयारी — अच्छी भाषायी दक्षता उच्च शिक्षा तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उपयोगी होती है।

भाषा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, शिक्षण में मौखिक भाषा अभिव्यक्ति की विशेष भूमिका होती है। मौखिक अभिव्यक्ति से अर्जित कुशलताएँ अन्य भाषाई कौशलों के विकास में योगदान देते हैं, बालक का यदि भाषा ज्ञान अच्छा है तो वह अन्य विषय जैसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, साहित्य, गणित, आदि विषयों को आसानी से समझ एवं सीख सकता है। निम्नलिखित बातों से यह स्पष्ट होता है कि भाषा का संबंध सीखने की प्रक्रिया से होता है बालक का भाषा ज्ञान किसी भी विषय की उपलब्धि के परिणाम को इष्टतम बनाने का प्रयास करता है।

मनुष्य अपने विचारों एवं भावनाओं के विनिमय में भाव मुद्राओं, संकेतों, तथा भाषा का प्रयोग करता है, भाषा ही सबसे सरल शाब्दिक माध्यम है, क्योंकि भाव मुद्राओं एवं संकेत का क्षेत्र सीमित होता है। सामान्यतः भाषा के अनेक रूप होते हैं जो इस प्रकार हैं मातृभाषा, प्राचीन भाषा, विदेशी भाषा, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा। बालक जन्म के पश्चात् माता-पिता तथा परिवार के सदस्यों से जिस भाषा को सीखना है उसे मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा में व्यक्ति का सर्वोत्तम अधिकार होता है।

भाषा सीखने में कई कारकों जैसे परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, परिवार के सदस्यों का भाषा का प्रयोग, उनके आसपास का वातावरण बालक के भाषा विकास को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। यदि परिवार समाज शुद्ध भाषा का प्रयोग करता है तो बालक शुद्ध एवं सही भाषा प्रयोग सीखता है, इसके विपरीत बहु भाषा प्रयोग करने वाले परिवार के बच्चों में भाषा भ्रंति देखने को मिलती है साथ ही खराब वातावरण में बच्चों का भाषा विकास अवरुद्ध हो जाता है। बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है परिवार में बालकों बड़ों का अनुकरण कर भाषा को सीखते हैं, इसके अतिरिक्त खेल के मैदान में तथा विद्यालय पाठ्यचर्या के दौरान बालक कहानी, वार्तालाप, विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पढ़ना, लिखना आदि क्रियाओं के माध्यम से भाषा को सीखते हैं जिससे बालक का भाषा विकास बेहतर होता है।

अध्ययन आदत – जब कोई व्यक्ति किसी क्रिया को बार-बार दोहराता है तो कुछ समय पश्चात् उसे व्यक्ति में वह क्रिया बिना किसी प्रयास के स्वतः ही संचालित होने लगती है बार-बार दोहराए गए इस प्रकार के परिणाम को आदत करते हैं।

गैरेट के अनुसार— “आदत किसी ऐसे व्यवहार को दिया गया नाम है जो प्रायः बार-बार दोहराए जाने पर स्वचालित हो जाता है”। अच्छी आदतों का निर्माण कर छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता है छात्रों की आदतों में निम्न विशेषताएँ दृष्टिकोण होती हैं।

सुगमता – ऐसे कार्य जो बार-बार दोहराए जाते हैं जिससे वह सरल व सुगम हो जाते हैं उन्हें पुनः किसी विशेष प्रयास में किया जा सकता है।

रोचकता – जिन कार्यों को करने की आदत पड़ जाती है वह उन्हें रुचिकर लगने लगते हैं।

एकरूपता— एक कार्य को बार-बार करने में एकरूपता होती है परिणाम स्वरूप एक आदत पड़ जाती है जैसे पढ़ना लिखना, घूमना, खेलना, खाना पीना, आदि।

यथार्थता – यथार्थता से तात्पर्य आदत निर्माण के परिणाम स्वरूप कार्य में त्रुटि का कम होना होता है।

शीघ्रता— आदत जन्य कार्यों में शीघ्रता होती है, क्योंकि उस कार्य को करने के लिए अत्यधिक सोच विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

ध्यान स्वतंत्रता – आदत जन्य कार्यों को करने के लिए अत्यधिक ध्यान की आवश्यकता नहीं होती है, जैसे—साईकिल चलाना सीखने के पश्चात् साईकिल चलाने के समय बहुत ज्यादा ध्यान केंद्रित नहीं करना पड़ता है। आदत निर्माण में कुछ प्रमुख बातों का ध्यान रखा जाना नितांत आवश्यक होता है व्यक्ति जिस कार्य को आदत बनाना चाहता है, उसे कार्य को करने का संकल्प करना चाहिए जैसे संकल्प की दृढ़ता कहा जाता है। क्रियाशीलता आदत निर्माण में महत्वपूर्ण है बिना क्रियाशीलता की आदत निर्माण असंभव कार्य है जब तक किसी कार्य को करने की आदत ना पड़ जाए तब तक उसे कार्य को जारी रखना चाहिए जिससे संलग्नता कहा जाता है। नहीं तो कार्य में शिथिलता आ जाती है।

अभ्यास का महत्वपूर्ण योगदान होता है यदि अभ्यास में निरंतर नहीं रहती है तो आदत निर्माण असंभव कार्य है इसके अतिरिक्त पुरस्कार दंड आदत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अच्छी आदतें अच्छे चरित्र का निर्माण करती हैं, अच्छी आदतें छात्रों को ज्ञान कौशल अर्जन में उपयोगी सिद्ध होती है।

निष्कर्ष—

बालक के सर्वांगीण विकास में कई तथ्यों की विशेष भूमिका होती है लेकिन उसमें सबसे प्रमुख भूमिका भाषा तथा अध्ययन आदतों की होती है। बालक की शिक्षा किसी न किसी भाषा में होती है, और यदि छात्र भाषा में निपुण है तभी वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है साथ में अध्ययन संबंधी आदतों का शिक्षा प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान होता है, यदि आदत निर्माण नहीं हो पाती है, तो विद्यार्थी कहीं ना कहीं असफलता को प्राप्त होते हैं, क्योंकि अच्छी आदतें अच्छे चरित्र का निर्माण करती है साथ ही अच्छे सामाज्य का भी निर्माण करती हैं। अध्ययन में नियमितता ही सफलता की सीढ़ी है, नियमितता विषय ज्ञान को बनाए रखती है, तथा भाषा विषय को सीखने समझने में सहायता प्रदान करती है अतः बालकों की शिक्षा में भाषा तथा अध्ययन आदतों का विशेष महत्व होता है। जहाँ भाषा विषय को रुचिकर एवं ज्ञान सुगम बनाती है वहीं अध्ययन आदतें बालकों में नियमितता एवं अच्छे चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती हैं, भाषा न केवल संज्ञानात्मक कौशल अर्जन में सहायक होती है, बल्कि रचनात्मक सोच एवं समस्या समाधान क्षमता भी बढ़ती है। भाषा विकास तथा अध्ययन आदतों के परिणाम स्वरूप छात्रों में समग्र विकास देखने को मिलता है और उनके शैक्षिक उपलब्धि में भी सहायता प्रदान करती है।

संदर्भ

1. सिंह, अरुण कुमार; शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली 1100002 संस्करण 2010
2. गुप्ता, एस.पी./गुप्ता अलका, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज उत्तर प्रदेश संस्करण 2019
3. भाई योगेंद्र जीत भाषा का शिक्षण शास्त्र अग्रवाल पब्लिकेशन संस्करण प्रथम 2014
4. एस. के मंगल, शिक्षा मनोविज्ञान, संस्करण 2013